अनुलग्नक-5

पूंजी बाजार एवं डेरिवेटिव सेगमेंट (संवर्ग) के लिए जोखिम प्रकटीकरण दस्तावेज

इस दस्तावेज में स्टॉक एक्सचेंजों के इक्विटी/डेरिवेटिव सेगमेंटों में ट्रेडिंग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। सभी संभावित घटकों/ग्राहकों को एक्सचेजों में इक्विटी/डेरिवेटिव सेगमेंट में ट्रेडिंग करने से पहले इस दस्तावेज का अध्ययन करना चाहिए।

स्टॉक एक्सचेंज/SEBI न तो अकेले और न ही संयुक्त रूप से तथा न तो स्पष्ट रूप से और न ही अंतर्निहित रूप में, इस प्रकटीकरण दस्तावेज की पूर्णता, पर्याप्तता या सटीकता की गारंटी देता है और न ही स्टॉक एक्सचेंज/SEBI ट्रेडिंग सेगमेंटों में भाग लेने के किसी भी गुण का अनुमोदन करते हैं या पारित करते हैं। यह संक्षिप्त विवरण ट्रेडिंग के सभी जोखिमों एवं अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं का प्रकटीकरण नहीं करता है।

निहित जोखिमों को ध्यान में रखते हुए, आपको केवल तभी लेनदेन करना चाहिए जब आप उस संबध की प्रकृति और अपने जोखिम की हद को समझते हों जिसमें आप प्रवेश कर रहे हों।

आपको जानना चाहिए और पहचानना चाहिए कि इक्विटी शेयरों, डेरिवेटिव कांट्रैक्ट या स्टॉक एक्सचेंज पर ट्रेड किए जाने वाले अन्य विलेखों (इंस्ट्रूमेंट्स) में ट्रेडिंग, जिनमें विभिन्न मात्राओं में जोखिम शामिल होते हैं, आम तौर पर सीमित संसाधनों/सीमित निवेश और/या ट्रेडिंग अनुभव और कम जोखिम सहनशीलता वाले किसी व्यक्ति के लिए उपयुक्त स्थल नहीं है। इसलिए आपको अपनी वित्तीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि ऐसी ट्रेडिंग आपके लिए उपयुक्त हैं या नहीं। यदि आप शेयर बाजारों में ट्रेड करते हैं और प्रतिकूल परिणाम या नुकसान उठाते हैं, तो आप उस के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार होंगे और स्टॉक एक्सचेंज/इसका समाशोधन निगम (क्लीयरिंग कॉर्पोरेशन) और/SEBI, किसी भी तरीके से इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे और आपके पास यह दलील देने का विकल्प नहीं होगा कि आपको शामिल जोखिम के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं दी गई थी या यह कि आपको संबंधित स्टॉक ब्रोकर द्वारा निहित पूर्ण जोखिम के बारे में नहीं बताया गया था। घटक/ग्राहक परिणामों के लिए पूर्णतया जिम्मेदार होंगे और उस आधार पर किसी भी कांट्रैक्ट को रद्द नहीं किया जा सकता है। आपको अभिज्ञापित और स्वीकृति देनी चाहिए कि स्टॉक एक्सचेंजों पर ट्रेड किए जाने वाले किसी डेरिवेटिव कांट्रैक्ट की खरीद और/या बिक्री के आदेश निष्पादित करते समय लाभों की कोई गारंटी नहीं हो सकती है और/या हानियों का काई अपवाद नहीं हो सकता है।

आपको यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि एक स्टॉक ब्रोकर के माध्यम से स्टॉक एक्सचेंजों पर आपकी डीलिंग (लेनदेन), स्टॉक ब्रोकर द्वारा निर्धारित कुछ औपचारिकताओं को पूर्ण करने के विषयाधीन होगी जिसमें अन्य चीजों के साथ साथ अपने ग्राहक को जानें फार्म को भरना, अधिकारों एवं दायित्वों का पढ़ना, क्या करें और क्या न करें, आदि शामिल हो सकते हैं, और संबंधित स्टॉक एक्सचेंजों, इनके समाशोधन निगमों के नियमों, उप-नियमों एवं विनियमों, और SEBI द्वारा निर्धारित समय समय पर जारी दिशानिर्देशों एवं स्टॉक एक्सचेंजों या इनके समाशोधन निगम द्वारा समय समय पर जारी परिपत्रों के विषयाधीन हैं।

स्टॉक एक्सचेंज कोई भी सलाह प्रदान नहीं करते हैं या सलाह देने की इच्छा नहीं रखते हैं और किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए जवाबदेह नहीं होंगे जो स्टॉक एक्सचेंजों के स्टॉक ब्रोकर और/या इस दस्तावेज में शामिल किसी भी जानकारी के आधार पर किसी भी तृतीय पक्ष के साथ किसी भी व्यावसायिक संबंध स्थापित करता है। इस दस्तावेज में शामिल किसी भी जानकारी को व्यावसायिक सलाह के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। इस तरह की ट्रेडिंग में शामिल जोखिमों को बिना पूर्ण-रूपेण समझे और बिना समीक्षा किए, ट्रेड करने के लिए कोई भी विचार नहीं बनाया जाना चाहिए। यदि आप निश्चित नहीं हैं, तो आपको उस बारे में पेशेवर सलाह लेनी चाहिए।

यह विचार करने के लिए कि ट्रेड किया जाए या नहीं या किसी को अपनी ओर से ट्रेड करने के लिए अधिकृत किया जाए या नहीं, आपको निम्नलिखित के बारे में जानकारी होनी चाहिए या इनसे परिचित होना चाहिएः-

1. मूलभूत जोखिमः

1.1 उच्च अस्थिरता का जोखिमः
अस्थिरता का तात्पर्य उस कीमत में गतिशील परिवर्तन से है जिस पर एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट किया जाता है जब ट्रेडिंग गतिविधियां स्टॉक एक्सचेंजों में जारी रहती है। सामान्यतः एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट की अस्थिरता जितनी उच्च होती है उसके मूल्य में परिवर्तन भी उतना ही अधिक होता है। सक्रिय प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट्स की तुलना में कम ट्रेड की जाने वाली प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट्स में सामान्यतः अधिक अस्थिरता हो सकती है। अस्थिरता के परिणाम के रूप में, आपके आदेश केवल आंशिक रूप से निष्पादित किए जा सकते हैं या बिल्कुल भी निष्पादित नहीं किए जा सकते हैं, या वह कीमत जिस पर आपके आदेश निष्पादित किए जाते हैं, अंतिम ट्रेडेड कीमत से थोड़ी भिन्न हो सकती है या लगातार बदल सकती है जिसके परिणामस्वरूप कल्पित या वास्तविक नुकसान हो सकता है।

1.2 निम्नतर तरलता (लोअर लिक्विडिटी) का जोखिमः
तरलता एक प्रतिस्पर्धी कीमत पर और न्यूनतम कीमत अंतर के साथ तेजी से प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट्स की खरीद और/या बिक्री के लिए बाजार सहभागियों की क्षमता को दर्शाती है। सामान्यतः यह माना जाता है कि एक बाजार में उपलब्ध आदेशों की संख्या जितनी अधिक होती है, तरलता उतनी ही अधिक होती है। तरलता महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिक तरलता के साथ, निवेशकों के लिए तेजी से और न्यूनतम कीमत अंतर के साथ प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट्स को खरीदना और/या बेचना आसान हो जाता है, और परिणामस्वरूप, निवेशकों द्वारा खरीदी या बेची गई प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव के लिए एक प्रतिस्पर्धी कीमत का भुगतान किए जाने या प्राप्त होने की संभावना होती है। सक्रिय प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट्स की तुलना में कुछ प्रतिभूतियों में कम तरलता का खतरा हो सकता है। परिणामस्वरूप, आपका आदेश केवल आंशिक रूप से निष्पादित किया जा सकता है, या अपेक्षाकृत अधिक कीमत अंतर के साथ निष्पादित किया जा सकता है या बिल्कुल भी निष्पादित नहीं किया जा सकता है।

1.2.1 डे-ट्रेडिंग रणनीति के एक भाग के रूप में प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट्स की खरीद या बिक्री के परिणामस्वरूप भी नुकसान हो सकता है, ऐसी स्थिति में, प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट्स को अपेक्षित कीमत स्तरों की तुलना में, कम/उच्च कीमतों पर खरीदा/बेचा जा सकता है, इसलिए एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट डिलीवर करने या प्राप्त करने के लिए कोई भी खुली स्थिति या दायित्व न रखें।

1.3 व्यापक स्प्रेड का जोखिमः
स्प्रेड सर्वोत्तम खरीदी कीमत और सर्वोत्तम बिक्री कीमत के बीच के अंतर को दर्शाता है। यह एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट खरीदने और इसके तुरंत बाद बेचने या विपरीत रूप से कीमतों के बीच अंतर को प्रदर्शित करता है। निम्नतर तरलता एवं उच्च अस्थिरता के परिणामस्वरूप कम तरल या गैर-तरल प्रतिभूतियों/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट्स के लिए सामान्य से अधिक स्प्रेड हो सकता है। यह बदले में बेहतर कीमत की स्थापना में बाधा उत्पन्न करेगा।

1.4 जोखिम को कम करने वाले आदेशः
उन आदेशों (जैसे "स्टॉप लॉस" आदेश, या "लिमिट" आदेश) को रखना जो हानियों को कुछ राशि तक सीमित करने का इरादा रखते हैं, कई बार प्रभावी नहीं हो सकते हैं क्योंकि बाजार की स्थितियों में तेज उतार-चढ़ाव के कारण ऐसे आदेशों को निष्पादित करना संभव नहीं हो सकता है।

1.4.1 एक "बाजार" आदेश की कीमत पर ध्यान दिए बिना विपरीत ओर से आदेशों की उपलब्धता के विषयाधीन तुरंत निष्पादित किया जाएगा और यह कि, जबकि ग्राहक को एक "बाजार" आदेश का त्वरित निष्पादन प्राप्त हो सकता है, निष्पादन बकाया आदेशों की उपलब्ध कीमतों पर हो सकता है जो कीमत समय प्राथमिकता पर आदेश मात्रा को संतुष्ट करते हों। यह समझा जा सकता है कि ये कीमतें उस प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट में अंतिम ट्रेड किए गए मूल्य या सर्वोत्तम कीमत से काफी भिन्न हो सकती हैं।

1.4.2 एक "लिमिट" आदेश को केवल आदेश के लिए निर्दिष्ट "लिमिट" कीमत या एक बेहतर कीमत पर निष्पादित किया जाएगा। हालांकि, ग्राहक को मूल्य संरक्षण प्राप्त होता है तथापि यह संभावना है कि आदेश को बिल्कुल भी निष्पादित नहीं किया जा सकता है।

1.4.3 एक स्टॉप लॉस आदेश को सामान्यतः एक स्टॉक/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट की वर्तमान कीमत से "अलग" स्थापित किया जाता है, और ऐसे आदेश केवल तभी सक्रिय होते हैं जब प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट स्टॉप कीमत पर पहुंचता है या उसके माध्यम से ट्रेड करता है। बिक्री स्टॉप आदेश साधारणतया वर्तमान कीमत से नीचे प्रविष्ट किए जाते हैं, और खरीद स्टॉप आदेश साधारणतया वर्तमान कीमत से ऊपर प्रविष्ट किए जाते हैं। जब प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट पूर्व निर्धारित कीमत तक पहुंच जाता है, या इस तरह के मूल्य से होकर ट्रेड करता है तो स्टॉप लॉस आदेश एक बाजार/लिमिट आदेश में बदल जाता है और लिमिट पर या बेहतर स्थिति में निष्पादित किया जाता है। इस बात का कोई आश्वासन नहीं है कि लिमिट आदेश निष्पादन योग्य हो जाएगा, चूंकि एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कंट्रैक्ट पूर्व निर्धारित कीमत पर कार्य कर सकती है, ऐसी स्थिति में ऐसे आदेश के निष्पादित न होने का जोखिम सिर्फ एक नियमित लिमिट आदेश के रूप में उत्पन्न होता है।

1.5 समाचार उद्घोषणाओं का जोखिमः
वे समाचार घोषणाएं जो ट्रेडिंग के दौरान स्टॉक/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट के मूल्य को प्रभावित कर सकती हैं, और कम तरलता एवं उच्च अस्थिरता के साथ संयोजित किए जाने पर, अचानक प्रतिभूति/कांट्रैक्ट की कीमत में एक अप्रत्याशित धनात्मक या ऋणात्मक हलचल का कारण बन सकते हैं।

1.6 अफवाहों का जोखिमः
कई बार कंपनियों/मुद्राओं के बारे में शब्दों, समाचार पत्रों, वेबसाइटों या समाचार एजेंसियों आदि के माध्यम से बाजार में अफवाहें फैलने लगती हैं। निवेशकों को इससे सावधान रहना चाहिए और अफवाहों के आधार पर कार्य करने से बचना चाहिए।

1.7 प्रणालीगत जोखिमः
उच्च मात्रा ट्रेडिंग अक्सर बाजार खुलते समय और बाजार बंद होने से पहले घटित होगी। इस तरह की उच्च मात्रा दिन में किसी भी समय पर हो सकती है। इसके फलस्वरूप आदेश निष्पादन या पुष्टिकरण करने में देरी हो सकती है।

1.7.1 अस्थिरता की अवधि के दौरान, लगातार अपने आदेश की मात्रा या कीमतों को संशोधित करने या नया आदेश स्थापित करने वाले बाजार भागीदारों की वजह से, आदेश निष्पादन एवं इसके पुष्टिकरण में देरी हो सकती है।

1.7.2 कुछ निश्चित बाजार परिस्थितियों में, एक उचित कीमत पर या समग्रतः बाजार में एक स्थिति को समाप्त करना तब मुश्किल या असंभव हो सकता है जब खरीद पक्ष या बिक्री पक्ष का कोई भी आदेश बकाया न हो, या यदि असामान्य ट्रेडिंग गतिविधि या प्रतिभूति/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट के सर्किट फिल्टर को पार करने पर या किसी अन्य कारण की वजह से एक प्रतिभूति/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट में ट्रेडिंग को रोक दिया गया हो।

1.8 प्रणाली/नेटवर्क कंजेशनः
आदेशों को स्थापित करने और अनुमार्गित करने के लिए सेटेलाइट/लीज्ड लाइन आधारित संचार, तकनीकों और कंप्यूटर प्रणालियों के संयोजन पर आधारित इलेक्ट्रॉनिक मोड में एक्सचेंजों पर ट्रेडिंग होती है। इस प्रकार, वहां संचार विफलता या प्रणालीगत समस्याएं या प्रणाली से धीमी या देरी से प्रतिक्रिया या ट्रेडिंग को रोकने या ऐसी कोई अन्य समस्या/गड़बड़ मौजदू हो सकती है, जहां ट्रेडिंग प्रणाली/नेटवर्क के लिए पहुंच स्थापित करना संभव नहीं था, जो नियंत्रण से बाहर हो सकता है और जिसके परिणामस्वरूप आंशिक या पूर्ण रूप से खरीद या बिक्री आदेशों को संसाधित करने या न करने में देरी हो सकती है। आपको यह ध्यान देने के लिए आगाह किया जाता है कि यद्यपि ये समस्याएं स्वभावतः अस्थायी हो सकती है लकिन जब आपके पास खुली स्थिति या गैर-निष्पादित आदेश शेष हों तो ये सभी निष्पादित लेनदेनों का निपटान करने के लिए आपके दायित्वों के कारण जोखिम का वहन करते हैं।

2. जहां तक डेरिवेटिव सेगमेंटों का संबंध है, कृपया निम्नलिखित अतिरिक्त सुविधाओं पर ध्यान दें और इनसे स्वयं को परिचित कराएं:-

2.1 "लीवरेज" या "गियरिंग" का प्रभावः
डेरिवेटिव बाजार में, मार्जिन की राशि डेरिवेटिव कांट्रैक्ट की राशि का एक छोटा अनुपात होता है, अतः लेनदेन 'लीवरेज्ड' या 'गियर्ड' हो जाते हैं। डेरिवेटिव ट्रेडिंग जिसे मार्जिन की एक अपेक्षाकृत छोटी राशि के साथ किया जाता है, मार्जिन राशि की तुलना में अधिक लाभ या हानि की संभावना प्रदान करती है। लेकिन डेरिवेटिव में लेनदेन में उच्च स्तर का जोखिम शामिल होता है।

इसलिए आपको वास्तव में डेरिवेटिव में ट्रेडिंग करने से पहले निम्न विवरणों को पूर्णतया समझना चाहिए और साथ ही व्यक्ति की परिस्थितियों, वित्तीय संसाधनों आदि को ध्यान में रखकर सावधानी के साथ ट्रेड करना चाहिए। यदि कीमतें आपके विपरीत चली जाती हैं तो आपको अपेक्षाकृत कम समय में अंशतः या पूरी मार्जिन राशि का नुकसान हो सकता है। इसके अलावा, हानि मूल मार्जिन राशि से अधिक हो सकती है।

क) फ्यूचर्स ट्रेडिंग में सभी स्थितियों का दैनिक निपटान शामिल होता है। हर दिन खुली स्थितियों को सूचकांक/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट के समापन स्तर के आधार पर बाजार के लिए चिन्हित किया जाता है। यदि कांट्रैक्ट आपके खिलाफ जाता है तो आपके लिए इस तरह के उतार चढ़ावों के फलस्वरूप होने वाले नुकसान की (अनुमानित) राशि जमा करना आवश्यक होगा। इस राशि का भुगतान निर्धारित समय सीमा के भीतर करना होगा, सामान्यतः अगले दिन ट्रेडिंग प्रारंभ होने से ठीक पहले।

ख) यदि आप समय सीमा के अंदर अतिरिक्त राशि जमा करने में विफल होते हैं या यदि आपके खाते में बकाया ऋण होता है तो स्टॉक ब्रोकर पूरी स्थिति या उसके एक हिस्से या स्थानापन्न प्रतिभूतियों को समाप्त कर सकते हैं। इस मामले में, आप इस तरह की समाप्ति के फलस्वरूप होने वाले किसी भी नुकसान के लिए उत्तरदायी होंगे।

ग) निश्चित बाजार परिस्थितियों के अंतर्गत एक निवेशक के लिए ऐसे लेनदेन निष्पादित करना मुश्किल या असंभव हो सकता है। उदाहरण के लिए, यह स्थिति गैर-तरलता जैसे कारकों के कारण हो सकती है यानी जब वहां अपर्याप्त बोलियां या प्रस्ताव होते हैं या कीमत सीमा या सर्किट ब्रेकर आदि के कारण ट्रेडिंग का स्थगन किया गया हो सकता है।

घ) बाजार में स्थिरता बनाए रखने के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं: मार्जिन दर में परिवर्तन, नकदी मार्जिन दर या अन्य में परिवर्तन। ये नए मानदंड मौजूदा अस्थिर ब्याज-राशि पर भी लागू किए जा सकते हैं। ऐसी स्थितियों में, आपको अतिरिक्त मार्जिन डालने या अपनी स्थितियों को कम करने की आवश्यकता होगी।

ङ) आपको अपने ब्रोकर से उन डेरिवेटिव कांट्रैक्ट्स की पूरी जानकारी यानी अनुबंध विनिर्देशों एवं उससे जुड़े दायित्वों के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध कराने की मांग करनी चाहिए जिन पर आपने ट्रेड करने की योजना बनाई है।

2.2 मुद्रा विशिष्ट जोखिमः
1. विदेशी मुद्रा-मूल्यवर्ग कांट्रैक्ट्स में लेनदेन में लाभ या हानि, चाहे उन्हें आपके या किसी अन्य के न्यायिक क्षेत्र में ट्रेड किया जाता है, मुद्रा दरों में उतार-चढ़ावों से प्रभावित होगा, जहां कांट्रैक्ट के मुद्रा मूल्यवर्ग को दूसरी मुद्रा में बदलने की आवश्यकता होती है।

2. कुछ निश्चित बाजार परिस्थितियों में, आपके लिए एक स्थिति को समाप्त करना मुश्किल या असंभव हो सकता है। यह तब हो सकता है, उदाहरण के लिए, जब एक मुद्रा अविनियमित होती है या तय ट्रेडिंग बैंडों को विस्तारित किया जाता है।

3. मुद्रा कीमतें अत्यधिक अस्थिर होती हैं। मुद्राओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव अन्य चीजों के अलावा निम्नलिखित से प्रभावित होते हैं: आपूर्ति-मांग संबंधों को बदलना; ट्रेड, वित्तीय मौद्रिक, विनिमय नियंत्रण कार्यक्रम एवं सरकारों की नीतियां; विदेशी राजनीतिक एवं आर्थिक घटनाएं एवं नीतियां; राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ब्याज दरों और मुद्रास्फीति में परिवर्तन; मुद्रा अवमूल्यन; और बाजार स्थान की भावना। इन कारकों में से किसी को भी व्यक्तिगत सलाहकार द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता है कि एक सलाहकार की सलाह के परिणामस्वरूप एक भागीदार ग्राहक को ट्रेड में लाभ होगा या एक ग्राहक को इस तरह की घटनाओं से नुकसान नहीं उठाना होगा।

2.3 विकल्प धारकों का जोखिमः

1. एक विकल्प धारक के लिए अपेक्षाकृत कम समय में विकल्प के लिए भुगतान की गई संपूर्ण राशि को खोने का खतरा होता है। यह जोखिम एक विकल्प की प्रकृति को एक क्षीयमाण परिसंपत्ति के रूप में प्रदर्शित करता है जो वैधता समाप्त होने के बाद अनुपयोगी हो जाती। एक विकल्प धारक जो न तो द्वितीय बाजार में अपना विकल्प बेचता है और न ही इसकी समाप्ति से पूर्व इसका प्रयोग करता है, विकल्प में अपना पूरा निवेश खो देगा। यदि विचाराधीन (अंडरलाइंग) की कीमत में विकल्प की समय सीमा समाप्त होने से पहले प्रत्याशित दिशा में परिवर्तन नहीं होते हैं तो विकल्प की लागत को आवरित करने के लिए पर्याप्त हद तक निवेशक को विकल्प में उसके निवेश के एक महत्वपूर्ण भाग या पूरे निवेश का नुकसान हो सकता है।

2. एक्सचेंज प्रयोग प्रतिबंध लगा सकते हैं और उनके पास निर्दिष्ट परिस्थितियों में निश्चित समयों पर विकल्पों के प्रयोग को प्रतिबंधित करने का पूर्ण अधिकार होता है।

2.4 विकल्प लेखकों (ऑप्शन राइटर्स) का जोखिमः

1. यदि विचाराधीन (अंडरलाइंग) की कीमत में उतार-चढ़ाव प्रत्याशित दिशा में नहीं होता है तो विकल्प लेखकों पर पर्याप्त राशि के नुकसान का जोखिम होता है।

2. एक विकल्प लेखक होने का जोखिम उसी विचाराधीन हित पर अन्य विकल्पों को खरीदने और इस तरह एक स्प्रेड स्थिति बनाने या विकल्प बाजारों या अन्य बाजारों में हेजिंग स्थितियों के अन्य प्रकारों द्वारा कम किया जा सकता है। हालांकि लेखक द्वारा एक स्प्रेड या अन्य हेजिंग स्थिति बना लेने के बावजूद भी जोखिम महत्वपूर्ण हो सकता है। एक स्प्रेड स्थिति आवश्यक रूप से एक साधारण 'दीर्घ (लांग)' या 'लघु (शार्ट)' स्थिति की तुलना में कम जोखिमयुक्त नहीं होती है।

3. वे लेनदेन जिनमें उस संयोजन में कई विकल्प खरीदना एवं लेखन, या विचाराधीन हितों को खरीदने या शार्ट सेलिंग के संयोजन में विकल्पों को खरीदना या लेखन शामिल होता है, निवेशकों के लिए अतिरिक्त जोखिम उत्पन्न करते हैं। संयुक्त लेनदेन जैसे विकल्प स्प्रेड, एक विकल्प को खरीदने या लेखन की तुलना में अधिक जटिल होते हैं। और इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि निवेश के किसी भी क्षेत्र में, एक जटिलता जिसे अच्छी तरह से समझा न गया हो, अपने आप में एक जोखिम कारक है। हालांकि यह सुझाव नहीं दिया जाता है कि संयोजन रणनीतियों पर विचार नहीं किया जाता है, जैसा विकल्पों में सभी निवेशों के मामले में होता है, किसी ऐसे व्यक्ति से परामर्श करने की सलाह दी जाती है जो विभिन्न बाजार परिस्थितयों के तहत संयोजन लेनदेनों के जोखिमों और संभावित रिवार्ड के संबंध में अनुभवी एवं जानकार है।

3. वायरलेस तकनीक/स्मार्ट आर्डर रूटिंग या किसी अन्य तकनीक के माध्यम से ट्रेडिंगः

वायरलेस तकनीक/स्मार्ट आर्डर रूटिंग या किसी भी अन्य तकनीक के माध्यम से प्रतिभूतियों की ट्रेडिंग से जुड़ी सुविधाओं, जोखिमों, जिम्मेदारियों, दायित्वों और देनदारियों को परिभाषित करने के लिए किसी भी अतिरिक्त प्रावधान को स्टॉक ब्रोकर द्वारा ग्राहक के ध्यान में लाया जाना चाहिए।

4. सामान्य

4.1 शब्द 'घटक/ग्राहक' का तात्पर्य है और इसमें शामिल हैः एक क्लाइंट, एक ग्राहक या एक निवेशक जो एक्सचेंजों द्वारा प्रदान किए गए मैकेनिज्म के माध्यम से प्रतिभूति/डेरिवेटिव कांट्रैक्ट प्राप्त करने और/या बेचने के उद्देश्य के लिए एक स्टॉक ब्रोकर के साथ सौदा करते हैं।

4.2 शब्द 'स्टॉक ब्रोकर' का तात्पर्य है और इसमें शामिल हैः एक स्टॉक ब्रोकर, एक ब्रोकर या स्टॉक ब्रोकर जिसे एक्सचेंजों द्वारा यथावत स्वीकार किया गया है और जिन्होंने SEBI से पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त किया है।